International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 6.924 Volume 9, Issue 02, February 2022
Website- www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

चाणक्य नीति का मानव जीवन पर प्रभाव

डॉ. संदीप कुमार (हलुवा सया)

सार

चाणक्य जिन्हें वष्णुगुप्त या कौटिल्य के नाम से भी जाना जाता है, वे प्राचीन भारत में राजनीति वज्ञान के अग्रदूत थे तथा जिनकी रचनाएँ आज भी बहुत प्रासं गक हैं। उन्होंने महान चंद्रगुप्त मौर्य के सलाहकार के रूप में कार्य कया और मौर्य साम्राज्य के उदय में महत्वपूर्ण भू मका निभाई। यह कहना गलत नहीं होगा क उन्होंने मौर्य वंश के संस्थापक के संरक्षक और साम्राज्य के निर्माण में महत्वपूर्ण भू मका निभाई।

चाणक्य जी का यह मानना था क एक राजा का धर्म न केवल प्रजा को सुशासन प्रदान करना बल्कि राज्य को समृद्ध बनाना भी होना चाहिए। एक राजा इतना सक्षम होना चाहिए क वह अपने राज्य की आ र्थक स्थिति तथा सुरक्षा को मजबूत कर सकें / प्रस्तुत कार्य का मुख्य उद्देश्य चाणक्य नीति का मानव जीवन पर प्रभाव को उल्ले खत करना है/

मुख्य शब्द:

अर्थव्यवस्था, अर्थशास्त्र , नीतिशास्त्र

भू मका

मानव जीवन में चाणक्य जी का योगदान अतुल्य है, और उनके द्वारा दी गयी शक्षाओं को अपने जीवन में अनुसरण करके ही हम इस महान वचारक, दार्शनिक, शक्षक, सलाहकार और रणनीतिकार को अपनी ओर से सच्ची श्रधान्ज ल प्रदान कर सकते हैं|

© **Associationof Academic Researchers and Faculties (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

चाणक्य भारत के एक जटिल राजनेता और अर्थशास्त्री थे। उन्होंने व भन्न आ र्थक मुद्दों पर अपना दृष्टिकोण व्यक्त कया और कृ ष उत्पादन के अनुकूल कृ ष के व भन्न पहलुओं का वश्लेषण कया। उन्होंने प्रबंधन और स्वा मत्व जैसी कई श्रे णयों के आधार पर कृ ष भू म का वर्गीकरण कया। उन्होंने सामान्य परिस्थितियों में अनाज के संग्रह को भू-राजस्व के रूप में भी निर्धारित कया।

उनकी दूरदृष्टि, कूटनीति और ज्ञान ने मौर्य साम्राज्य को अपनी सीमाओं का वस्तार करने में मदद की। उन्होंने चंद्रगुप्त के पुत्र बिंदुसार को भी राजनीतिक शक्षा प्रदान की। यह भी माना जाता है क चाणक्य ने अखंड भारत का सपना देखा था। उनकी यह धारणा थी क सभी क्षेत्रीय राजाओं का एकजुट करना बहुत ही महत्वपूर्ण है ता क वे सामूहिक रूप से वदेशी आक्रमण का सामना कर सकें। उन्होंने अपनी कूटनीति से व भन्न राज्यों के शासकों के साथ गठजोड़ बनाया और इस तरह मौर्य साम्राज्य की जड़ों को मजबूत करने में अभूतपूर्व कार्य कया।

कौटिल्य का अर्थशास्त्र, प्राचीन भारत में नि र्मत राज्य शल्प पर सबसे प्र सद्ध, राजनीतिक, आ र्थक और प्रशासनिक अवधारणाओं से संबं धत एक ग्रंथ है, जिसका अनुसरण करके एक राजा अपने कर्तव्यों के साथ न्याय कर सकता है।

300 ईसा पूर्व में चाणक्य जी ने अपने ग्रन्थ 'चाणक्य नीति' में एक राज्य या देश पर सफलतापूर्वक शासन करने के जो रहस्य उल्ले खत कये थे, वे आज भी तर्क-सांगत हैं तथा वर्तमान काल में भी इन बातों का अनुसरण करके एक देश या राज्य को वकास के पथ पर ले जाया जा सकता है|

चाणक्य जी बहुत ही बु द्धमान जन-प्रतिनी ध थे| वे कभी स्वयं तो राजा नहीं बनना चाहते थे परन्तु उन्होंने चन्द्रगुप्त जैसे बालक को राजनीति शक्षा प्रदान करके मौर्य साम्राज्य की जड़ों को मजबूती प्रदान करने का कार्य सम्पूर्ण कया| उन्होंने जीवन की प्रत्येक बाधाओं का बहुत

ही बारीकी से अनुसरण कया तथा एक साधारण मानव को कस तरह से अपने जीवन में आने वाली बाधाओं का सामना करना चाहिए, इसका उल्लेख अपने कृत्यों में कया|

लोक प्रय प्राचीन भारतीय ग्रंथ - 'अर्थशास्त्र' और 'चाणक्य नीति' - का श्रेय चाणक्य को दिया जाता है। राज्य की आ र्थक नीति और सैन्य रणनीति पर काम करते हुए ये ग्रंथ आज भी उपयोगी हैं। उन्होंने तक्ष शला वश्व वद्यालय में व्याख्यान दिया और इस लए उन्हें आचार्य के रूप में भी संबो धत कया गया।

चाणक्य नीति का मानव जीवन पर प्रभाव

"अर्थशास्त्र" और "नीतिशास्त्र" जैसे महान ग्रंथों की रचना करके चाणक्य जी ने अपना नाम इतिहास के स्व र्णम पृष्ठों में दर्ज करवा लया है | उन्होंने वास्तव में अपनी चतुराई से युगों का मार्गदर्शन कया है। चाणक्य जी के द्वारा उजागर कये गये कुछ वचार निम्न ल खत हैं:

1) "एक शासक का मुख्य कर्त्तव्य अपने प्रजा के कल्याण की दिशा में निरंतर प्रगति करना है।"

2) राज्य के संगठन को अटूट बनाये रखना भी एक राजा का मुख्य दायित्व है। उनका सबसे उल्लेखनीय कर्त्तव्य सभी को समान समझना है।"

3) "सामान्य नागरिकों की संतुष्टि ही शासक का परम धर्म है। उनका कल्याण ही राज्य या देश का कल्याण है। एक राजा को कभी भी अपने लाभ या कल्याण के बारे में नहीं सोचना चाहिए, बल्कि अपनी प्रजा की खुशी में अपनी खुशी की खोज करने का प्रयास करना चाहिए।"

इन महान वचारों की रचना 2300 साल पहले चाणक्य जी जैसे महान राजनेता और चतुर ऋ ष ने की थी।

चाणक्य का प्रथम सद्धांत राज्य या देश की आंतरिक तथा बाहरी सुरक्षा है| उनके अनुसार कोई भी देश या राज्य यदि आंतरिक तथा बाहरी रूप से सुर क्षत नहीं है तो उस राज्य या देश का पतन होना निश्चित हो जाता है| इ स लये एक राजा का मुख्य धर्म अपनी प्रजा को

आंतरिक तथा बाहरी सुरक्षा प्रदान करना होता है|

उनके अनुसार केवल बाहरी सुरक्षा के लए राज्य या देश की सीमाओं पर सेना तैनात करने भर से ही युद्ध का खतरा टाला नहीं जा सकता| वे कहते थे क एक देश को जितना खतरा बाहरी शक्तियों से होता है , उतना ही खतरा एक देश को आंतरिक तत्वों से भी होता है| इसी लए एक अच्छा शासक वही है जो अपने देश की सुरक्षा के लए न केवल अपनी सेना का प्रयोग करें बल्कि अपने देश की आंतरिक स्थिति का पता लगाने के लए चतुर गुप्तचरों के संगठन को गठित करें|

चाणक्य, अपने गहन ज्ञान की सहायता से, 'स्वाभा वक मत्रों' और 'संभा वत सहयो गयों' के बीच अंतर करना जानते थे और 'शक्ति संतुलन' की अवधारणा को भी वे प्रतिपादित करते थे। उनका यही ज्ञान; बाद में शीत युद्ध के वर्षों में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के प्रमुख प्रेरक के रूप में उभरा और शीत युद्ध के बाद के युग में भी प्रासं गक हो गया।

जैसा क पहले ही उल्लेख कया गया है, चाणक्य राज्य की प्रधानता और राज्य पर शासन करने वाले राजनीतिक नेतृत्व की सर्वोच्चता में वश्वास करते थे। उन्होंने साम्राज्य के भीतर जाति और क्षेत्र की व वधता के बावजूद भारत को एकजुट कया। राज्य की स्थिरता और सुरक्षा उनका प्रमुख मशन था।

चाणक्य नीति के सद्धान्तों का अनुसरण करके कोई भी शासक जाति और वर्ग से ऊपर उठकर अपनी प्रजा का वकास कर सकता है| चाणक्य नीति समाज में सद्भावना का निर्माण करती है | इस नीति के अनुसार समाज में सभी को वकास करने के लए उ चत अवसर मलने चाहिए|

चाणक्य जी के अनुसार, जब भी शास्त्रों और धर्म पर आधारित ल खत कानून के बीच तुलना होती है, तो ल खत कानून मान्य होता है। उनके द्वारा बताये गये शासन के वैचारिक ढांचे का अनुकरण करने से आधुनिक राज्य या देश का निर्माण कया जा सकता है ।

चाणक्य जी ने आंतरिक शांति और सुरक्षा के महत्व का समझा, शासक के लए एक

समतावादी दृष्टिकोण को उजागर कया, जिसमें कहा गया था क समाज में असमान व्यवहार की वजह से ही जन-आक्रोश का जन्म होता है और वद्रोह को दबाने के लए सैन्य शक्ति के वकल्प का उपयोग करने से पहले सुलह की रणनीति को प्राथ मकता दी जानी चाहिए|

वचार- वमर्श

चाणक्य जी को राजनीति का ज्ञाता माना जाता है| उनके द्वारा दी गयी राजनीतिक शक्षा का आज भी दुनिया भर के शासकों द्वारा अनुसरण कया जाता है| उन्होंने अपने ग्रन्थ 'चाणक्य नीति' में समाज के प्रत्येक वर्ग के बारे में उल्लेख कया| उन्होंने बताया क एक पति का क्या धर्म होना चाहिए और एक पत्नी का पति के प्रति क्या धर्म होना चाहिए| उन्होंने 'चाणक्य नीति' में दोस्ती के मुख्य सद्धान्तों का भी उल्लेख कया तथा मानव को अपने शत्रुओं पर कैसे मान सक वजय प्राप्त करनी चाहिए, इसके रहस्य को भी उजागर कया|

एक ऋ ष जिसके बारे में कहा जाता है क वह इतना प्रतिभाशाली था क उसने एक साधारण से बालक को भारत का सम्राट बना दिया। हो सकता है क आज इसका महत्व कम हो गया हो ले कन उनकी शक्षाओं का आज के युग में भी एक अनमोल मूल्य है और खासकर जब भारत लगातार राजनीतिक उथल-पुथल का शकार रहा है। यह वडंबना ही लगती है क जिस देश को सदियों पहले एक प्रतिभा ने अकेले ही एकजुट कया था, उसे कई बार भीतर से वद्रोह का सामना करना पड़ता है।

कसी सरकार की शांतिवादी प्रकृति हमें अर्थशास्त्र के लेखक चाणक्य के शब्दों की याद दिलाती है, "पुस्तकें मूर्खों के लए उतनी ही अनुपयोगी होती हैं जितनी क एक अंधे व्यक्ति के लए एक दर्पण उपयोगी होता है।" हम अक्सर अपने आंतरिक मामलों में वदेशी शक्तियों की बढ़ती प्रमुखता के बारे में शकायत करते हैं जिससे हमारे देश की स्थिरता बिगड़ती जा रही है।

चाणक्य के सुनहरे शब्द "हर पड़ोसी राज्य दुश्मन है और दुश्मन का दुश्मन दोस्त है" वदेश नीति का रहस्य बताता है। पा कस्तान या चीन उसी का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है जिसके साथ हमें लाखों लोगों की जान की कीमत पर युद्ध लड़ना पड़ा। उनके शब्द "जैसे ही भय निकट आता है, उस पर हमला करो और उसे नष्ट कर दो" हमें सफलता का पहला कदम सखाता है।

यदि चाणक्य ने अपने अर्थशास्त्र के माध्यम से राजनीति और अर्थशास्त्र का चेहरा बदल दिया, तो उन्होंने चाणक्य नीति के अपने तर्क-संगत शब्दों से आम नागरिकों के जीवन को बेहतर बनाने के उपायों को भी रेखां कत कया।

चाणक्य जी मूर्ती पूजा में वश्वास नहीं रखते थे| उनके अनुसार दुखी तथा असहाय व्यक्तियों की सहायता करने मात्र से ही पुण्य का भागीदार बना जा सकता है| वे मानव सेवा को ही ईश्वर की सेवा करने के ही समान समझते थे| आज भी उनकी यह वचारधारा वर्तमान समय में तर्क संगत है|

जैसा क हमारा समाज वकृत संबंधों का सामना करता है, उनके ये शब्द एहतियाती पहल के रूप में आते हैं “कभी भी ऐसे लोगों से दोस्ती न करें जो सामजिक या आ र्थक रूप में आपसे ऊपर या नीचे की स्थिति में हैं। ऐसी दोस्ती आपको कभी कोई खुशी नहीं देगी" जैसा क कसी को पता होना चाहिए "हर दोस्ती के पीछे कुछ स्वार्थ होता है। स्वार्थ के बिना मत्रता नहीं होती। यह कड़वा सच है"

इस समय जब लोग सफलता प्राप्त करने के लए बिना सोचे समझे ही भाग रहें हैं, तब उन्हें कोई नया कार्य जीवन में करने से पहले इन प्रश्नों के उत्तर को जानने की को शश करनी चाहिए, "मैं क्यों हूँ , ऐसा करने से क्या परिणाम हो सकते हैं और क्या मैं सफल हो सकूंगा। जब आप गहराई से सोचें और इन सवालों के संतोषजनक जवाब पाएं, तभी आगे बढ़ें।"

निष्कर्ष

चाणक्य जी ने 'अर्थशास्त्र' और 'चाणक्य नीति' के द्वारा देश ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण दुनिया को यह मार्गदर्शन प्रदान कया क कैसे एक नेता को अपने देश या राज्य की जनता की सुरक्षा तथा उनके कल्याण के लए तत्पर होना चाहिए और सभी प्रकार की बाधाओं को दूर करके अपनी प्रजा के जीवन को खुशहाल बनाना चाहिए|

चाणक्य जी की यह वशेषता थी क वे न केवल उच्च शासकों के बारे में सोचते थे बल्कि उन्होंने साधारण मानव की समस्याओं तथा उनके ववरण का अपने ग्रंथों में उल्लेख कया| चाणक्य जी द्वारा बताये गये रहस्यों का अनुसरण करके एक साधारण मानव भी अपने जीवन को प्रगति के पथ पर अग्रसर कर सकता है|

सन्दर्भ सूची

• झा, एल.के. और के.एन. झा (2018)। "चनायका: द पायनियर इकोनॉ मस्ट ऑफ द वर्ल्ड", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल इकोनॉ मक्स, वॉल्यूम। 25 संख्या 2-4, पीपी 267-282।

• कामत, एम.वी. (2019)। "21 वीं सदी के लए कौटिल्य", पुस्तक समीक्षा डॉ नारायणाचार्य के.एस.' और 'आज के लए कौटिल्य की प्रासं गकता'

• कांगले, आर.पी. (2012)। द कौटि लया अर्थशास्त्र: पार्ट एच-एन इंग्लिश ट्रांसलेशन वद क्रटिकल एंड एक्सप्लेनेटरी नोट्स, दूसरा संस्करण, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा। ल मटेड, दिल्ली।

• कांगले, आर.पी. (2016)। कौटिल्य अर्थशास्त्र: भाग III - एक अध्ययन, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्राइवेट ल मटेड, दिल्ली।